Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 10

सामान्य हिंदी एवं व्याकरण और हिंदी निबंध एवं प्रारूप लेखन

SIERRA INNOVATIONS

सामान्य हिंदी एवं व्याकरण और हिंदी निबंध एवं प्रारूप लेखन

CONTENTS

हिन्दी

1.	संधि	1
2.	समास	24
3.	विराम चिह्न और उसके प्रयोग	39
4.	अलंकार	43
5.	तत्सम – तद्भव	50
6.	विलोम – शब्द	54
7.	पर्यायवाची	60
8.	मुहावरे	63
9.	लोकोक्ति	73
10.	वाक्य के लिए एक शब्द	86
11.	प्रशासनिक शब्दावली	92
12.	संक्षेपण	101
13.	पल्लवन या विस्तारण	111
14.	अनुवाद	113
15.	अपठित गद्यांश	129
16.	निबंध – लेखन	136
17.	प्रारूप लेखन	141
	• शासनादेश	142
	• कार्यालय आदेश	144
	• परिपत्र	145
	• अनुस्मारक/स्मरण पत्र	146
	• अर्द्ध–शासकीय पत्र	147
	• अधिसूचना	148
	• पृष्ठांकन	149
	• प्रतिवेदन	150
	• कार्यालय टिप्पणी	152
	• वर्गीकृत विज्ञापन	154
	• प्र – पत्र	155

समास

- समास शब्द का अर्थ – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**	**समास विग्रह**
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	**समास या समस्त पद**	**समास विग्रह**
1.	यथासमय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।

उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।
1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है –

1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभावी समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

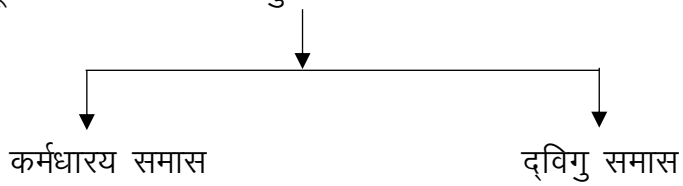

नोट –

कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।

अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।

3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

समासः भेद, विग्रह और बहुव्रीहि में रूपांतरण

क्र.सं.	समास	समास की संरचना		उदाहरण	विग्रह	4. बहुव्रीहि समास– अन्य पद प्रधान (दोनों पदों का विशिष्ट अर्थ निकलने पर सभी समासों से बने बहतीहि)	
1.	अध्ययीभाव समास (पल्ला पद प्रधान)	पहला पद उपसर्ग पहला पद अव्यय दूसरा पद अव्यय शब्द की आवृत्ति	अन्य	प्रतिदिन यथाशक्ति जीवनभर घर–घर	दिन के बाद दिन शक्ति के अनुसार जीवन पर्यंत घर के बाद घर	प्रतिकूल–कूल (किनारा) के विपरीत विरुद्ध अनुमति–मति के अनुसार–आज्ञा अनुचर–पीछे चलनेवाला–सेवक बेधड़क – बिना धड़के के–निडर, निस्संकोच	पहला पद पसर्ग होने के बावजूद विशिष्ट अर्थ निकलने के कारण बहुव्रीहि
2.	तत्पुरुष समास (दूसरा पद प्रधान) तत्पुरुष	कारक–चिह्न का लोप (को, से/के द्वारा के लिए, स का/के/की, में/पर)		यशप्राम राज–पुत्र बनवासी गौशाला	यश को प्राप्त राजा का पुत्र वन में वास करनेवाला गो के लिए शाला	गगनचुंबी–गान को चूमनेवाला–बहुत ऊँचा राजपूत–राजा का पूत–एक जाति विशेष स्वर्गवास –स्वर्ग में वास–मृत्यु हितोपदेश–हित के लिए अदेश–संस्कृत की पुस्तक विशेष	
	कर्मधारय तत्पुरुष	गुणवाचक विशेषण विशेषण उपमेय उपमप्त	विशेष्य विशेषण उपमान उपमेय	नीलकमल हरालपन चंद्रमुख मुखचंद्र	नीता है जो काल जोहा है जो मयन है चंद्र के समान मुख मुख रूपी चंद्र	लंबोदर–लंया है उदर जिसका–गणेश पुंडरीकाक्ष – पुंडरीक के समान अक्षि है जिनकी–विष्णु पहला पद विशेषण/उपमान होने के बावजूद विशिष्ट अर्थ निकलने के कारण बहुव्रीहि	
	दृविगु तत्पुरुष	संख्यावाचक विशेषण	विशेष्य	त्रिभुज सतुष्पव पंचरल	तीन भुजाओं की आकृति चापों का संगम पाँच रत्नों का समूह	त्रिमंत्र–तीन हैं जिनके नेत्र–शिव चतुर्मुख–चार हैं जिनके मुख–ब्रह्मा पंचानन – पाँच है जिनके आनन–शिव	

3.	द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान)	1. इतरेतर (दो का अर्थ – दोनों) 2. वैकल्पिक (दो में से कोई एक) 3. समाहर (दो से अधिक)	माता–पिता हानि–लाभ बाप–दादा	माता और पिता हानि या लाभ बाबा, दादा आदि	कहा–सुनी–कला और सुनना –जबानी झगड़ा रोनाधोना – रोना–धोना आदि–शिकायत करना उधेड़–बन–उधेड़ना या बुनना–विचारों में उथल–पुथल, परिवर्तन

1. अव्ययीभाव समास – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इसमें एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

समस्त पद	**विग्रह**
1. बेखबर	बिना खबर के
2. प्रतिदिन	हर दिन
3. भरपेट	पेट भरकर
4. आजन्म	जन्म से लेकर
5. आमरण	मरणतक
6. यथासमय	समय के अनुसार
7. प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8. प्रतिक्षण	हर क्षण
9. बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में
दिनों दिन	दिन के बाद दिन
हाथों हाथ	हाथ ही हाथ में
घड़ी–घड़ी	घड़ी के बाद घड़ी

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत, यथा, प्रति, बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे – बेशर्म – शर्म से रहित

अकारण	बिना कारण के	मारा मारी	मार के बाद मार
अनजाने	बिना जानकर	चला चली	चलने के बाद चलना
यथास्थिति	जैसी स्थिति है	धीरे–धीरे	धीरे के बाद धीरे
यथामति	जैसी मति है	बीचों–बीच	बीच के भी बीच में
यथा विधि	जैसी विधि निधारित है	धड़ा–धड	धड़ के बाद पुनः धड़ की आवाज
नगण्य	न गण्य	कभी–न–कभी	कभी में से कभी

अव्ययीभावी समास के महत्वपूर्ण उदाहरण

पहला पद अव्यय होने पर–

यथार्थ	जैसा अर्थ है
यथायोग्य	जितना योग्य है
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथास्थान	जो स्थान निर्धारित है
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो
सपरिवार	परिवार के साथ
सप्रमाण	प्रमाण सहित
सकुशल	कुशलता के साथ
सपत्नीक	पत्नी के साथ
हररोज	प्रत्येक रोज
हरवर्ष	प्रत्येक वर्ष
भरपेट	पेट भरकर
तथागति	वैसी गति है
अनजाने	बिना जानकार
अकारण	बिना कारण के
यथा संभव	जैसा संभव हो
यावज्जीवन	जब तक जीवन है तब तक

पहला पद उपसर्ग होने पर–

प्रतिदिन	हर दिन
प्रत्यक्ष	आँख के आगे
प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
निडर	बिना डर के
निर्भय	भय से रहित
नीरस	रस से रहित
निर्विवाद	विवाद से रहित
आमरण	मरण तक
आपादमस्तक	मस्तक से पाद तक
आजीवन	जीवन भर
आजन्म	जन्म से
अनुरूप	जैसा रूप है वैसा
अनुसार	जैसा सार है वैसा
अनुदेश	देश के अनुसार
अत्यावश्यक	आवश्यकता से अधिक
अत्यधिक	अधिक से अधिक
अतींद्रिय	इन्द्रियों से परे
अत्यन्त	अन्त से अधिक

दूसरा पद अव्यय

मृत्यु पर्यन्त	मृत्यु तक
सेवार्थ	सेवा के लिए अर्थ
विवेकपूर्वक	विवेक के साथ
योग्यतानुसार	योग्यता के अनुसार
दिन भर	पूरे दिन
जीवन पर्यन्त	जीवन तक
क्रमानुसार	कर्म के अनुसार
अवसरानुसार	अवसर के अनुसार
बेचैन	बिना चैन के
बेशर्म	बिना शर्म के
निकम्मा	बिना काम के
अत्युत्तम	उत्तम से उत्तम
अनुगमन	गमन के पीछे गमन
प्रतिफल	फल के बदले फल
नालायक	जो लायक न हो
प्रतिबिम्ब	बिम्ब का बिम्ब

2. **तत्पुरुष समास –** इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है। इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं –

   (i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

   जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्म को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

कर्म तत्पुरुष समास के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

हस्तगत	हस्त को गत
सर्वज्ञ	सब को जानने वाला
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त
चिड़िमार	चिड़ी को मारने वाला
ग्रंथकार	ग्रंथ को करने (लिखने) वाला
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त

सुखकर	सुख को करने वाला	क्रमागत	क्रम को आगत
संकटापन्न	संकट को आपन्न	आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
सुखप्राप्त	सुख को प्राप्त	गगनचुंबी	गगन को चूमनें वाला
विकासोन्मुख	विकास को उन्मुख	शरणापन्न	शरण को आपन्न
मरणातुर	मरने को आतुर	व्यक्तिगत	व्यक्ति का गत
दुःखद	दुःख को देने वाला	तर्क संगत	तर्क को संगत
तिलकुटा	तिल को कूटकर बनाया गया	जितेन्द्रियाँ	इन्द्रियों को जीतने वाला
जेबकतरा	जेब को कतरने वाला	स्वर्गगत	स्वर्ग को गत
भूधर	पृथ्वी को धारण करने वाला	दिनकर	दिन को करने वाला

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

करण तत्पुरुष समास के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

श्रमजीवी	श्रम से जीवित रहने वाला	भयभीत	भय से भीत
शोकाकुल	शोक से आकुल	भडभूँजा	भाड़ द्वारा भूनने वाला
हथकरधा	हाथों से चलने वाला करघा	बैलगाड़ी	बैल से चलने वाली गाड़ी
स्वर्णहार	सोने से बना हार	तुलसीरचित	तुलसी द्वारा रचित
रोग पीडित	रोग से पीडित	प्रतीक्षातुर	प्रतीक्षा से आतुर
रेल यात्रा	रेल द्वारा यात्रा	धर्मांध	धर्म से अंधा
रेखा अंकित	रेखा के द्वारा अंकित	गुणयुक्त	गुण से युक्त
मनगढ़त	मन से गढ़ा हुआ	कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य
वाकयुद्ध	वाणी के द्वारा युद्ध	अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
अकाल पीडित	अकाल से पीडित		

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
धुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता

छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युत्गृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

संप्रदान तत्पुरुष के उदाहरण

रसोई घर	रसोई के लिए घर	जनहित	जन के लिए हित
स्नानागार	स्नान के लिए आगार	मच्छरदानी	मच्छर रोकने के लिए दानी
हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी	गोशाला	गो के लिए शाला
सभामण्डप	सभा के लिए मण्डप	आवेदन पत्र	आवेदन के लिए पत्र
रनिवास	रानियों के लिए निवास	सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
रंगमंच	रंग के लिए मंच	युवावाणी	युवाओं के लिए वाणी
यज्ञवेदी	यज्ञ के लिए वेदी	यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला
भूतबलि	भूत के लिए बलि	शपथपत्र	शपथ के लिए पत्र
प्रौढ़ शिक्षा	प्रौढ़ो के लिए शिक्षा	परीक्षा भवन	परीक्षा के लिए भवन
देश भक्ति	देश के लिए भक्ति	राजभक्ति	राजा के लिए भक्ति

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

अपादान तत्पुरुष के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

स्वर्गपतित	स्वर्ग से पतित	क्रमागत	क्रम से आगत
शोभाहीन	शोभा से हीन	कालातीत	काल से अतीत
विवाहेतर	विवाह से इतर (अलावा)	इन्द्रियातीत	इंद्रियो के अतीत
लोकभय	लोक से भय	पदच्युत	पद से च्युत
लक्ष्य भ्रष्ट	लक्ष्य से भ्रष्ट	दूरभाष	दूर से भाष
धर्म विमुख	धर्म से विमुख	जन्मोत्तर	जन्म से उत्तर
जलोत्पन्न	जल से उत्पन्न	दूरदर्शन	दूर से दर्शन

जन्मांधजन्म से अंधा

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य कर कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा
पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

संबंध तत्पुरुष के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

हस्तलाघव	हस्त का लाघव	देशभक्त	देश का भक्त
सत्रावसान	सत्र का अवसान	घुड़दौड़	घोड़ो की दौड़
शास्त्रानुकूल	शास्त्र के अनुकूल	ग्रामोत्थान	गाँव का उत्थान
शब्दकोश	शब्दों का कोश (संग्रह)	खलनायक	खलों का नायक
रामचरित	राम का चरित	अश्वमेघ	अश्व का मेघ (बलिदान)
रंगभेद	रंग का भेद	दुःख सागर	दुःख का सागर
मनस्थिति	मन की स्थिति	जगन्नाथ	जगत् का नाथ
प्रश्नोत्तर	प्रश्न का उत्तर	वाग्दान	वाणी का दान
पुष्पांजलि	पुष्पों की अंजलि	प्रेमोपहार	प्रेम का उपहार

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

अधिकरण तत्पुरुष के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

हरफनमौला	हर फन (कला) में मौला (कुशल)	दही–बड़ा	दही में डूबा हुआ बड़ा
स्वर्गवास	स्वर्ग में वास	तल्लीन	तद् (उस) में लीन
सर्वोत्तम	सर्व में उत्तम	जेबघड़ी	जेब में रहने वाली घड़ी
वाग्वीर	वाणी में वीर	जगबीती	जग पर बीती हुई
वनवास	वन में वास	ग्रामवासी	ग्राम में वास करने वाला
मृत्युंजय	मृत्यु पर जय	मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में श्रेष्ठ
ध्यानमगन	ध्यान में मगन	कवि पुंगव	कवियो में पुंगव (श्रेष्ठ)
देषाटन	देष में अटन	धर्मरत	धर्म मे रत
दानवीर	दान में वीर	धर्मान्ध	धर्म में अंधा
कर्त्तव्यनिष्ठ	कर्त्तव्य में निष्ठ		

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।
इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

नञ तत्पुरुष के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

अजर	न बूढ़ा होने वाला	नापसंद	नही है पसंद जो
अजन्मा	न जन्म लेनें वाला	नापाक	नही है पाक जो
अकर्म	बिना कर्म के	अकाट्य	नही काटने योग्य
अनशन	भोजन से रहित	अटल	न टलने वाला

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थाव् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	**विग्रह**
नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
द्विगु	दो गौओ का समूह
शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
चौराहा	चार राहों का संगम
पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
तिकोना	तीन कोनों का समूह
सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह
एकतरफा	एक ही तरफ है जो
अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
शतक	सौ का समूह
चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद – कुछ समस्त पदों में शब्द के अन्त में संख्यावाचक शब्दांश आता है।	
पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

द्विगु समास के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

सप्ताह	सप्त (सप्त) अहनों (दिनों) का समूह	चौहद्दी	चार हदों का आवरण
षटकोण	षट् (छः) कोणों का समूह	छदाम	छह दामों का समूह
पनसेरी	पाँच सेर का बाट	सतनजा	सात प्रकार के अनाजों का समूह
पंचरात्र	पाँच रात्रियों का समूह	दो आब	दो आब (नदियों) का समूह
दुबारा	दो बार	त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह
पँचरंगा	पाँच रंगों का मेल	पंजाब	पाँच आब (नदियों) का समूह
दुपहिया	दो हैं जिसके पहिये	चौपड़	चार फड़ो का समूह
दोपहर	दिन में दोपहर का समय	तिरंगा	तीन रंगों का समूह
दुगुना	दो बार गुना	अष्टसिद्धि	आठ सिद्धियों का समूह
तिराहा	तीन राहों का संगम	पंचवटी	पाँच वटों का समूह
तिमाही	तीन माह के बाद आने वाली	चौखट	चार खूँटों का समूह
चौमहला	चार महलो का समूह	त्रिपिटक	तीन पिटकों का समूह
षड्यन्त्र	छः यन्त्रों का समूह	नवनिधि	नो निधियों का समूह
दुअन्नी	दो आनों का समूह	त्रिवेदी	तीन वेदों का समाहार
चतुष्पदी	चार पदों का समूह	देवत्रयी	तीन देवों का समूह
चवन्नी	चार आनों का समूह	दो लड़ा	दो लड़ियों का समूह
दुधारी	दो धारों का समाहार	पंचवदन	पाँच वदनों का समूह
त्रिपाठी	तीन पाठों का जानने वाला	सप्तशती	सात सौ का समूह
पंचांग्र	पाँच अंगो का समूह	चतुवर्ग	चार वर्गों का समूह
चोबे/चतुर्वेदी	चार वेदों का समाहार	तिबारा	तीन द्वारों का समूह
शतांश	सौवा अंश	सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह
इकलौता	एक ही है जो	त्रिवेणी	तीन (वेणी) धाराओं का समूह
एकांकी	एक अंग का	द्विगु	दो गौओं का समूह

अपवाद	
नव रत्न	नौ रत्नों का समूह–द्विगु समास
नवरत्न	नौ है रत्न जो (बीरबल, तानसेन, अबुल फजल .....)(बहुव्रीहि)
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह–द्विगु समास
त्रिनेत्र	तीन है नेत्र जिसके (शिव)–बहुव्रीहि समास

4. कर्मधारय समास – इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।

इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।

इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते है।

समस्त पद	विग्रह
(i) विशेषण विशेष्य	
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन

नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)

(ii) उपमान– उपमेय युक्त पद	**विग्रह**
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख	चंद्र के समान है जो मुख

(iii) रूपक आलांकारिक युक्त पद	**विग्रह**
मनमंदिर	मनरूपी मंदिर
ताराघट	तारारूपी घट
शोकसागर	सागर रूपी शोक

(iv) सु/कु उपसर्ग से बने पद	**विग्रह**
सुपुत्र	सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग	सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	कुत्सित है जो पुत्र

कर्मधारय समास के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में है जो श्रेष्ठ	मुखारविंद	मुख रूपी अरविंद
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम है जो	वचनामृत	वचन रूपी अमृत
नरश्रेष्ठ	नरों में श्रेष्ठ है जो	संसार सागर	संसार रूपी सागर
कविवर	कवियों में वर (श्रेष्ठ) है जो	चरण कमल	चरण रूपी कमल
राम दयाल	राम है दयाल जी	क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
जन्मान्तर	जन्म है अन्य जो	कर–कमल	कर रूपी कमल
शुभागमन	शुभ है जो आगमन	बदबू	बद (बुरी) है जो बू (गंध)
तलघर	तल में है जो घर	रक्तकमल	रक्त जैसा है जो कमल
महाराजा	महान है जो राजा	ज्वालामुखी	ज्वाला के समान मुख है जो
शुक्लपक्ष	शुक्ल है जो पक्ष	महामात्य	महान है जो अमात्य
कालीमिर्च	काली है जो मिर्च	परमात्मा	परम है जो कंठ
महात्मा	महान है जो आत्मा	नीलकंठ	नीला है जो कंठ
परमाणु	परम है जो अणु	महामूर्ख	महान है जो मूर्ख
उड़नतस्तरी	उड़ती है जो तस्तरी	कतार्थ	पूर्ण हो गया है अर्थ जो
सुदर्शन	सु(अच्छे) है जिसके दर्शन	मंदबुद्धि	मंद है जो बुद्धि
बहुमूल्य	बहुत है मूल्य जो	चरमसीमा	चरम तक पहुँचती है जो सीमा
नवयुवक	नया है जो युवक	महर्षि	महान है जो ऋषि
सन्मार्ग	सत् है जो मार्ग	लघूत्तर	लघु है जो उत्तर
कुकृत्य	कुत्सित है जो कृत्य	शिष्टाचार	शिष्ट है जो आचार
अंधभक्ति	अंधी है जो भक्ति	उड़नखटोला	उड़ता है जो खटोला
महोत्सव	महान है जो उत्सव	सज्जन	सत् है जो जन
सुपथ	अच्छा है जो पथ	बहुउद्देश्यीय	बहुत है उद्देश्य जो
अल्पाहार	अल्प है जो आहार	प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
सदाचार	सत् है जो आचार	का पुरुष	कायर है जो पुरुष
कदाचार	कुत्सित है जो आचार	भ्रष्टाचार	भ्रष्ट है जिसका आचार
टटपूँजिया	टाट की है पूँजी जो	कृष्ण सर्प	कृष्ण है सर्प जो
मोटा–ताजा	जो मोटा है जो ताजा है	शीतोष्ण	जो शीत है जो उष्ण है
लाल सुर्ख	जो लाल है जो सुर्ख है	शुद्धाशुद्ध	शुद्ध है जो अशुद्ध है जो
उन्नतावनत	उन्नत है जो अवनत है जो	तुषार धवल	तुषार (बर्फ) के समान धवल सफेद है जो

5. द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।

इसके दोनों पद योजक – चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं व समास विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं।

इस समास के मुख्यतः तीन भेद होते है–

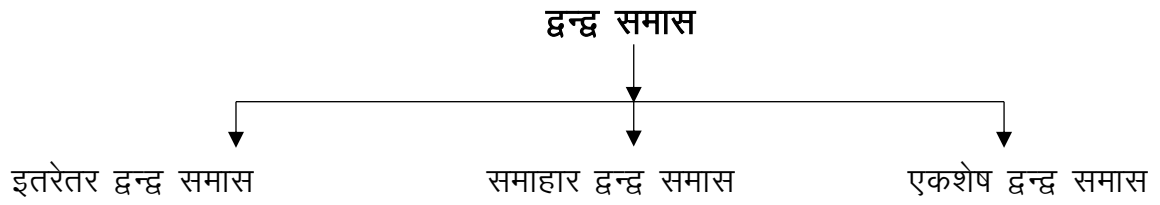

(i) इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में दो शब्दों का अर्थ होता है व दोनों पद प्रधान होते हैं, साथ में दोनों शब्दों का अर्थ भी अलग–अलग होता है।

अन्न–जल	अन्न और जल
आयात – निर्यात	आयात और निर्यात
दम्पती	दम् (पत्नी) और पति
दूध–रोटी	दूध और रोटी
देश– विदेश	देश और विदेश
दाल–रोटी	दाल और रोटी

(ii) समाहार द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं व दोनों शब्दों का अर्थ दो या दो से अधिक होता है।

आगा – पीछा	आगा, पीछा आदि
कंकर – पत्थर	कंकर, पत्थर आदि
रोक – टोक	रोक, टोक आदि
चाय – पानी	चाय, पानी आदि
खाना – पीना	खाना, पीना आदि
चलता – फिरता	चलता, फिरता,
धल – दौलत	धन, दौलत आदि

नोट – एक से 10 तक की संख्याओ का छोड़कर व 10 से भाज्य संख्या को छोड़कर अन्य सभी संख्यावाची शब्दों में समाहार द्वन्द्व समास होगा।

सैंतीस	–	सात और तीस का समाहार
चौबीस	–	चार और बीस का समाहार
तिरासी	–	तीन और अस्सी का समाहार

(iii) एकशेष/वैकल्पिक द्वन्द्व समास – इस समास में विग्रह करने पर तो कई पद होते हैं, परन्तु समस्त पद बनाते समय किसी एक को ही ग्रहण किया जाता है।

सुख–दुःख	सुख या दुःख
आज – कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि या लाभ
गमनागमन	गमन या आगमन
गुण – दोष	गुण या दोष

द्वन्द्व समास इतरेतर द्वन्द्व

पचास–साठ	पचास या साठ/पचास से साठ तक		
सोलह	दस और छः	देश–विदेश	देश और विदेश
राम–लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण	हाथी–घोड़ा–पालकी	हाथी, घोड़ा और पालकी
देवासुर	देव और असुर	सीधा–सादा	सीधा और सादा

गोरीशंकर	गोरी और शंकर	अन्न–जल	अन्न और जल
रात–दिन	रात और दिन	कंद–मूल–फल	कंद और मूल और फल
पाप–पुण्य	पाप और पुण्य	माँ–बाप	माँ और बाप
छल–कपट	छल और कपट	आय–व्यय	आय और व्यय
उपर–नीचे	उपर और नीचे	सीताराम	सीता और राम
हरि–हर	हरि और हर	राधाकृष्ण	राधा और कृष्ण
ग्यारह	दस और एक		
धनुर्बाण	धनु और बाण		

समाहार द्वन्द्व

सुख–सुविधा	सुख, सुविधा आदि	देखा–देखी	देखा, देखी आदि
रुपया–पैसा	रुपया, पैसा आदि	भरा–पुरा	भरा, पुरा आदि
मेल–मिलाप	मेल, मिलाप आदि	लेन–देन	लेन, देन आदि
भूल–चूक	भूल, चूक आदि	बोलचाल	बोल, चाल आदि
पेड़–पौधे	पेड़, पौधे आदि	जैसा–तैसा	जैसा, तैसा आदि
धन–दौलत	धन–दौलत आदि	कूड़ा–कचरा	कूड़ा, कचरा आदि
जलवायु	जल, वायु आदि	काम–काज	काम, काज आदि
हाथ–पाँव	हाथ, पाँव आदि	रहन–सहन	रहन, सहन आदि

एक शेष द्वन्द्व समास

जीवन–मरण	जीवन या मरण	लाभालाभ	लाभ या अलाभ
धर्माधर्म	धर्म या अधर्म	इधर–उधर	इधर या उधर
पाप–पुण्य	पाप या पुण्य	राग–द्वेष	राग या द्वेष
हाँ–ना	हाँ या ना	मारपीट	मार या पीट
यश–अपयश	यश या अपयश	ऊँच–नीच	ऊँच या नीच
भला–बुरा	भला या बुरा	जात–कुजात	जात या कुजात
राग–विराग	राग या विराग	कर्म धर्म	कर्म या धर्म

6. **बहुव्रीहि समास –** इस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण होते हैं व अन्य पद प्रधान होता है व शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकलता है।

जैसे – लंबोदर – लंबा है उदर (पेट) जिसका इस शब्द में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' शब्द प्रधान है।

समस्त पद	समास विग्रह
घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव
दशमुख	दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण
महावीर	महान् है जो वीर अर्थात् हनुमान
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात् सरस्वती
वज्रपाणि	वज्र है पाणी में जिसके वह (इन्द्र)
चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान है जिसका मुख (सुंदर स्त्री)
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात् गणेश
दिंगबर	दिशा ही है अंबर जिसका अर्थात् शिव

प्रायः कुछ समासों में एक ही साथ अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, ऐसी स्थिति सर्वप्रथम बहुव्रीहि समास का ही चयन करें। ज्ञात रहे यदि बहुव्रीहि समास न हो तब हम अन्य समास का चयन कर सकते हैं।

कर्मधारय व बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण व विशेष्य व उपमान व उपमेय का संबध होता है, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनो पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है।

मृगनयन	मृग के समान नयन (कर्मधारय)
नीलकंठ	वह जिसका कंठ नीला है (शिव) – बहुब्रीहि बहुव्रीहि / कर्मधारय
पीताम्बर	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पंचवटी	द्विगु / बहुव्रीहि
चौमासा	बहुव्रीहि / द्वन्द्व
गजानन	बहुव्रीहि / तत्पुरुष
मनोज	बहुव्रीहि / तत्पुरुष (उपपद)
दशानन	बहुव्रीहि / द्विगु

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

1. **द्विगु समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है व समस्त पद समूह का बोध प्रकट करता है।
   जैसे–
   चौराहा – चार राहों का समूह

2. **बहुव्रीहि समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है लेकिन समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।
   जैसे–
   चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु)
   तिरंगा – तीन हैं रंग जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)

समस्त पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियों मे प्रधान है जो
निर्भय	जो व्यक्ति किसी से भय नहीं खाता हो
अनन्त	अन्त नही जिसका
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
अनहोनी	न होने वाली घटना
चंद्रमौली	चंद्र है मौलि पर जिसके (शिव)
सुहासिनी	सुंदर है हंसी जिसकी वह (भारतमाता)
सुकेशी	सुदंर केश (किरणें) हैं जिसकी (चाँद)
कुरूप	असुन्दर रूप वाला
मीनाक्षी	मीन के समान हैं अक्षि जिसका (सुंदर स्त्री)
चन्द्रशेखर	शेखर पर चन्द्र है जिसके (शिवजी)
खगेश	खगों का ईश (गरूड़)
जितेंद्रिय	जीती हैं जिसने इंद्रियाँ (कामना रहित)
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी (व्यक्ति विशेष)
पीताम्बर	पीत अम्बर (वस्त्र) वाला (श्री कृष्ण)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)
षडानन	षड (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)
बहुमान	वह व्यक्ति जिसका बहुत मान हो
निरभिमान	वह व्यक्ति जिसमें अभिमान न हो
निर्लेप	किसी वस्तु या विषय में आसक्त न होने वाला विशेष
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)
निराधार	वह व्यक्ति जिसे कोई सहारा प्राप्त न हो।
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)
निर्भ्रम	जिस व्यक्ति के / में कोई भ्रम न हो।
कलमुँहा	काला है मुँह जिसका (लांछित व्यक्ति)
आनाकानी	ना करना – टालमटोल करना।

बहुव्रीहि समास

पीताम्बर	पीत (पीले) है अम्बर (वस्त्र) जिसके–(कृष्ण)
वज्रायुद्ध	वज्र का है आयुध जिसके–(इन्द्र)
नाकपति	नाक (स्वर्ग) का पति–(इन्द्र)
गिरिधर	गिरि (पहाड़) को धारण करने वाला–(कृष्ण)
मुरारि	मुर (राक्षस) के अरि (शत्रु)–(कृष्ण)
मधुसूदन	मधु (राक्षस) का सूदन (वध) करने वाला–(कृष्ण)
पुष्पधन्वा	पुष्पों का धनुष है जिसका–(कामदेव)
मनोज	मन में जन्म लेता है जो–(कामदेव)
अनंग	बिना अंग का–(कामदेव)
मकरध्वज	मकर का ध्वज है जिसका–(कामदेव)
वक्रतुण्ड	वक्र (टेढ़ा) है तुण्ड (मुख) जिसका–(गणेश)
लम्बोदर	लम्बा है उदर (पेट) जिसका–(गणेश)
मोदकप्रिय	मोदक (लड्डू) है प्रिय जिसको–(गणेश)
मूषक वाहन	मूषक (चूहा) है वाहन जिसका–(गणेश)
भवानी नंदन	भवानी के नंदन (पुत्र)–(गणेश)
शूलपाणि	शूल (त्रिशूल) है पाणि (हाथ) मे जिसके–(शिव)
चन्द्रशेखर	चन्द्र (चन्द्रमा) है शिखर (सिर) पर जिसके–(शिव)
महेश्वर	महान है जो ईश्वर–(शिव)
पशुपति	पशु का पति (स्वामी)–(शिव)
मदन रिपु	मदन (कामदेव) के रिपु (शत्रु) है जो–(शिव)
वीणापाणि	वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके–(सरस्वती)
धवलवसना	धवल (सफेद) है वसना (वस्त्र) जिसके–(सरस्वती)
वीणावादिनी	वीणा का वादन करने वाली–(सरस्वती)
पद्मासना	पदम (कमल) है आसन्न जिसके–(सरस्वती)
कपीश्वर	कपियों (वानरों) के ईश्वर है जो–(हनुमान)
वज्रदेह	वज्र के समान देह वाला–(हनुमान)
पुण्डरीकाक्ष	पुण्डरीक (नीलकमल) के समान अक्षि (आँखे) वाला–(विष्णु)
चक्रपाणि	चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके–(विष्णु)
गरूड़ध्वज	गरूड़ का ध्वज है जिनके–(विष्णु)
हलधर	हल को धारण करने वाला–(बलराम)
रोहिणीनंदन	रोहिणी के नंदन (पुत्र)–(बलराम)
दशरथ नंदन	दशरथ के नंदन (पुत्र)–(राम)
शैलनंदिनी	शैल (हिमालय) की नंदिनी (पुत्री)–(पार्वती)
नीरज	नीर (जल) से जन्म लेने वाला–(कमल)
सूतपुत्र	सूत (सारथि) का पुत्र–(कर्ण)
अब्द	अप् (पानी) द (देने वाला)–बादल
सुधाकर	सुधा (अमृत) की किरण वाला–(सूर्य)
अंशुमाली	अंशु (किरणों) की माला वाला–(सूर्य)
कठफोड़ा	काठ को फोड़ने वाला–(खातीचिड़ा)
कन्यादान	कन्या का दान (हिन्दू पद्धति लड़की के विवाह की)
जयपुर	जयसिंह द्वारा बसाया हुआ पुर (नगर)–(एक शहर विशेष)
तिलचट्टा	तेल को चाटने वाला–(एक कीड़ा विशेष)
नीलगाय	नीली है जो गाय–गाय की एक जाति विशेष–(रोजड़ा)
इकतारा	एक तार हो जिसके–(वाद्ययंत्र)
षड़ानन	षड़ (छः) है आनन (मुख) जिसके–(कार्तिकेय)
दामोदर	दामन (रस्सी) से बंधा है उदर जिसका–(कृष्णा)
चतुर्भुज	चार भुजाएँ है जिनके–(विष्णु)
रमापति	रमा का पति है जो–(विष्णु)
पद्मनाथ	पद्म (कमल) है नाभि के जिसके–(विष्णु)
सहस्त्रानन	सहस्त्र (हजार) है आनन (मुख) जिसके–(विष्णु)

कौशल्यानंदन	कौशल्या का नंदन (पुत्र) है जो–(राम)
त्र्यम्बक	त्रि (तीन) है अम्बक (नेत्र) जिसके वह–(शिव)
आशुतोष	आशु (शीघ्र) तोष (प्रसन्न) होने वाले–(शिव)
अन्नपूर्णा	अन्न को पूर्ण करने वाली है जो–(पार्वती)
सुमित्रानन्दन	सुमित्रा का नंदन है जो–(लक्ष्मण)
पंचशर	पाँच है शर (बाण) जिसके–(कामदेव)
मीनकेतु	मीन के ध्वज वाला–(कामदेव)
चतुरानन	चार है आनन (मुख) जिसके–(ब्रह्मा)
सुरेश	सुरों (देवताओं) का ईश है जो–(इन्द्र)
शचीपति	शची का पति है जो–(इन्द्र)
हिमालय	हिम (बर्फ) का है आलय (घर) जो–(एक पर्वत)
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों वाली पुस्तक–(पाणिनि की व्याकरण)
पंचामृत	पाँच अमृतों का समूह जिसमें–(घी, दूध, शहद, दही, गंगाजल)
तिलकधारी	तिलक को धारण करने वाला है जो–(ब्राह्मण)
रत्नगर्भ	रत्न है गर्भ में जिनके–(पृथ्वी)
अनुचर	अनु (पीछे) चर (चलने) वाला–(सेवक)
त्रिकूट	त्रि (तीन) कूटों (छोरों) का समूह (एक पर्वत जिस पर लंकापुरी है)
त्रिगुण	तीन गुणों का समूह–(रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण)
चक्षुश्रुवा	चक्षु (आँख) ही है श्रुवा (कान) जिसके–(साँप)
पंचतंत्र	पाँख है तंत्र (ज्ञान सूत्र) जिसमें–(एक संस्कृत ग्रंथ)
डंडीमार	डंडी से मारने वाला–(पान विक्रेता)
तीसमार खाँ	तीस को मारकर खाने वाला–(एक योद्धा)
बीकानेर	बीका का है नेर (छोटा शहर) जो–(एक शहर)
लोहागढ़	लोहे के समान अजेय गढ़ जो–(भरतपुर का किला)
अद्वितीय	जिसके समान कोई दूसरा न हो–(अनोखा)
असार	नही है सार जिसमें
सुधांशु	अमृत की किरण जिसमें–(चन्द्रमा)
राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति जो–(राष्ट्राध्यक्ष)
निर्जन	जन से रहित स्थान–(जंगल)
पिशाच	पिक्षित (माँस) भक्षण करने वाला–(राक्षस)
शाकप्रिय	शाक प्रिय है जिसको–(निरामिष व्यक्ति)
बड़भागी	बड़ा है भाग्य जिसका–(भाग्यशाली)